In eo errat C. quod केतन per संकेतस्यान explicat. इति, quamvis enarratoribus non probatum, bene quadrat, ut qua particula indicetur, quod foveat Radha animo doloris levamen.

Dist. 7. a. कलवामि = मन्ये D. cf. III. 7. — प्रियद्र्णानेन स्त्रीणां म्रलंकार्साफल्यं। इति भावः। D.

Dist. 9. Diiudicata iam varia scriptura, quod restat est interpretatio lectionis receptae. Arundines observare solita erat Radha, utpote sciens, tremulo earum strepitu Krishnae adventum indicari. Nunc autem eo perventum est desperationis, ut ne eas quidem curet. नपावति eodem sensu quo कलवित notum est. अनुमें minus quadrat, quia ea voce dicitur, facere aliquid Radham; quod omnino desperantis non est.

Dist. 10. b. कलावती = कवित्वकलायुता । D.

— 11. b. किमुत् = भ्रयद्या। D. Particula est disiunctiva et eodem sensu ponitur atque किमु. Vid. ad Hitop. prooem. dist. 10. et quae addidit Windischmannus meus, Sanc. p. 75. उत् formam habet neutrius thematis pronominalis, quod in particulam transire solet, ut इत् in चेत् et नित्. Hinc repete Latinorum ut. Omisit Wilso, praebet Wilkins p. 548.

Dist. 12. a. म्रन्तरेण = विना। D.

— 15. a. C. scripturam suam explicet: विकचं विकसितं च तत् जलतं पदां च तदल् लितं म्राननमेव चन्द्रो यस्याः सा। विकचदलकलित इति पाठे। etc. quae est aliorr. scriptura, विकचद् tamen pro विचलद् posito. — b. तन्द्रा = सुलानुभवनिद्रा। D.

Dist. 16. b. मुलिश्ता रसना यस्मिन् जधने तदत्या चाञ्चल्येन लोला चञ्चला। D.

— 17. दियतिविलोकनेन कृष्णमुखवीन्नणेन लिजिनं संज्ञातलज्जं सलज्जिमित्यर्थः इसितं यस्याः सा। पुनः कीटृशी। बहुविधिपकिशि(ख)णिउकलहंसादीनामिव नानाप्रकारं कूजितं यत्र एताटृशो यो रितिरसः क्रीडार्- सस्तेन रिसता हृष्टा। D.

Dist. 18. विपुला बहुला पुलका रोमाञ्चा यस्याः। पृथुर्महान् वेपयुः कम्पो भङ्गस् तरङ्ग इव यस्याः सा। पत्रचात् कर्मधारयः। D. Contra A: विपुलाः पुलकाः पृथुर् वेपयुत्रच। तेषां भङ्गास्तरङ्गा यस्याः सा।

Dist. 21. b. तिर्यन् = म्राइत्यन् D. = नाप्रायन् A. Cum D. consentiunt scholl. Mâl. M. I. 28.

Dist. 22. पूर्वगीतेन कस्याप्रिचिद्वपरीतमुक्तं। म्रधुना कस्याप्रिचत् स्वाधीनभर्तृकाया नायककर्तृक्रीउामाइ। समुदितेति। स्वाधीनभर्तृकालच्चणां। यस्या रितगुणाकृष्टः पतिः पाप्र्वं न मुद्यति। विचित्रा (त्र?) विश्वासक्ता (श्रमा?) स्वाधीनभर्तृका यथा। इति। D. — a. रमणी i. e. puellae amatae. — विलित = संकोचित। D.

Dist. 23. a. तर्लित nec concussus, चञ्चलीकृत, est, uti vult D. nec मुंबरी-कृत, resonans, uti asserit A. qui praeterea in hoc errat, quod तर्णास्य = श्रीकृष्णास्य धाननं enarrat, sed eo epitheto definiuntur cincinni, quibus circumfluitur quasi facies puellae, तर्णा. — b. i. e. cuius splendor fulmen refert.